(2023-24)

भाषा निर्देशिका

कक्षा : 6-8
बेसिक और एडवांस लेवल

ATISHI
आतिशी

MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
मंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002

प्यारे बच्चो,

आप सभी की शुरुआती पढ़ाई के लिए ज़रूरी है कि आपको पढ़ना–लिखना और बुनियादी गणित के सवालों को हल करना आना चाहिए। अपनी इन्हीं क्षमताओं के आधार पर आप आगे की कक्षाओं में अन्य विषयों को सीख सकते हैं। आपके अन्दर इन्हीं कौशलों को विकसित करने के लिए मिशन बुनियाद की शुरुआत की गई है, जहाँ कक्षा तीसरी से आठवीं तक के बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सीखने के मौक़े दिए जाते हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर बच्चा सीखने में सक्षम हो। मिशन बुनियाद की कक्षाओं में आपको उस स्तर से सिखाना शुरू किया जाएगा जहाँ आप अभी हैं और उस स्तर तक पहुँचाया जाएगा जहाँ आप जाना चाहते हैं। इसके द्वारा आपको आगे बढ़ने का हर वो मौक़ा दिया जाएगा जिसकी आपको ज़रूरत है।

इस नए सत्र में भी मिशन बुनियाद आप सभी के बुनियादी गणित और पढ़ने–लिखने के कौशल को निखारने का काम करेगा। जहाँ बहुत–सी कहानियाँ, गतिविधियाँ और खेल आपके सीखने के इस सफ़र को और मज़ेदार बना देंगे। मिशन बुनियाद की कक्षाओं में आप सभी को ऐसा वातावरण मिलेगा जिससे आप अपनी गति से सीख सकेंगे।

इसलिए आप लोगों से मेरी यह अपेक्षा है कि आप सभी बच्चे पूरे मन से, बहुत कुछ नया सीखने के लिए मिशन बुनियाद की कक्षाओं में ज़रूर शामिल हों। मुझे उम्मीद है कि मिशन बुनियाद से आप सभी ज़रूर लाभान्वित होंगे। बहुत अच्छे से पढ़ना–लिखना और गणित के सवालों को हल करना सीख जाएँगे और भारत को दुनिया का नंबर – 1 देश बनाने में अपना योगदान देंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

atishi

आतिशी

शिक्षा मंत्री, एनसीटी, दिल्ली सरकार

प्रस्तावना

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि कोविड –19 महामारी का कुप्रभाव पूरे विश्व में, सामाजिक, आर्थिक व मानसिक स्वास्थ्य पर हम सभी पर पड़ा है। इस समय में ख़ासकर बच्चों की पढ़ाई ज़्यादा प्रभावित हुई है। बच्चों की पढ़ाई आगे प्रभावित न हो, इसके लिए सरकारी और ग़ैर–सरकारी शैक्षणिक संस्थानों ने विभिन्न स्तर पर अलग–अलग तरीकों से, जैसे कि डिजिटल संसाधनों, अभिभावकों के फोन पर एस.एम.एस, पी.डी.एफ, आई.वी.आर और ऑडियो–वीडियो से संबंधित पठन सामग्रियाँ उपलब्ध करवाकर बच्चों को शैक्षिक रूप से लाभान्वित करने का प्रयास किया है और आगे भी यह प्रयास निरंतर जारी है। अब स्थिति सामान्य हो गई है। लेकिन, अलग–अलग सर्वे से पता चलता है कि बच्चों के पढ़ने–लिखने और गणित के स्तर में भारी गिरावट आई है। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि बच्चों को समझते हुए उन्हें शिक्षकों के द्वारा स्कूल में और अभिभावकों के द्वारा घरों में लगातार सहयोग किया जाए। यह सहयोग डिजिटल और गैर डिजिटल दोनों तरह से दिए जाएँ। बच्चों के बुनियादी कौशल को मज़बूत करने के लिए CAMaL यानी Teaching at the Right Level के इस निर्देशिका सम्बंधित गतिविधियाँ और पठन सामग्री बहुत उपयोगी हैं।

हमें आशा है कि बच्चों की ज़रूरत को समझेंगे और उनके अनुसार इनपुट देंगे ताकि वे जल्दी से आधारभूत दक्षता को हासिल कर लें।

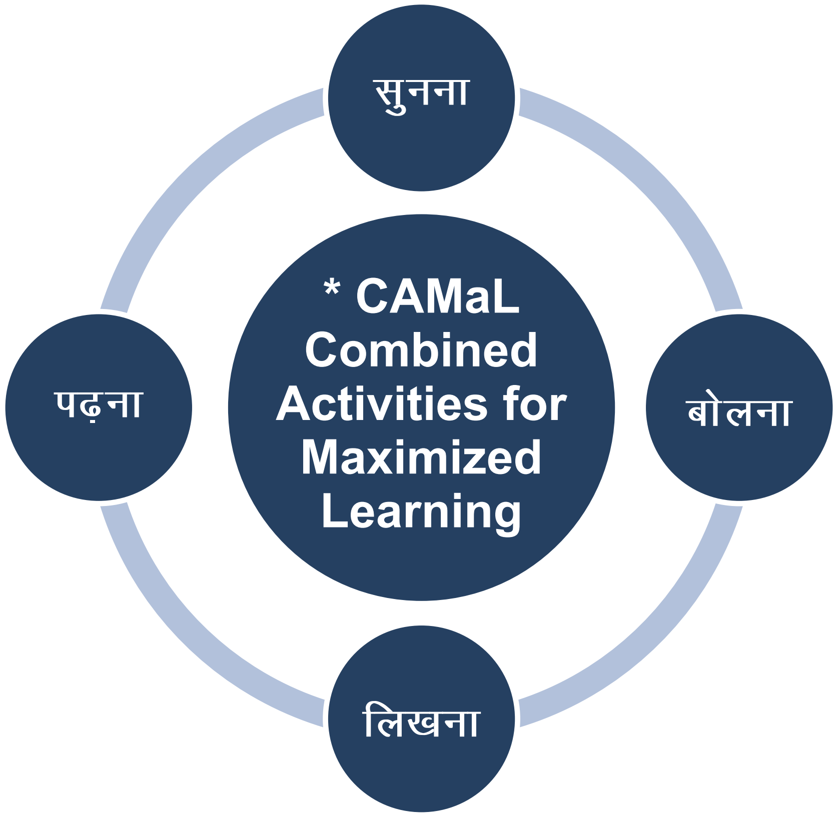

हिन्दी निर्देशिका

बच्चों के पढ़ने के स्तर को समझना

यदि बच्चा अनुच्छेद को आसानी से पढ़ लेता है तो उसे कहानी पढ़ने के लिए दें।

बच्चों की जाँच अनुच्छेद से शुरू करें।

बगीचे में एक पेड़ है।
पेड़ पर एक तोता रहता है।
तोते का रंग हरा है।
वह लाल टमाटर खाता है।

यदि बच्चा आसानी से अनुच्छेद नहीं पढ़ सकता है तो उसे शब्द पढ़ने के लिए दें।

लाल दूध पैर तेल
किला मोर
जूता कुल पानी मौक़ा

5 शब्द पूछें उसमें से 4 सही होने चाहिए। यदि बच्चा 4 शब्द सही–सही पढ़ सकता है तो उसे शब्द स्तर पर चिह्नित करें।

यदि बच्चा 4 शब्द सही–सही नहीं पढ़ सकता है तो उसे अक्षर पढ़ने के लिए दें।

ल प स क
ड ब
म ट झ ग

5 अक्षर पूछें उसमें से 4 सही होने चाहिए। यदि बच्चा 4 अक्षर सही–सही पढ़ सकता है तो उसे अक्षर स्तर पर चिह्नित करें।

यदि बच्चा 4 अक्षर सही–सही नहीं पढ़ सकता है तो उसे प्रारंभिक स्तर पर चिह्नित करें।

कहानी:

सावन का महीना था। आसमान में काले–काले बादल छाए हुए थे। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। मुझे झूला झूलने का मन किया। बड़े भैया एक मोटी–सी रस्सी लेकर बाहर आए। भैया ने रस्सी को पेड़ से लटकाकर झूला बनाया। सबने मिलकर खूब झूला झूला। बाकी बच्चे भी आकर मज़े से झूलने लगे। झूलते–झूलते रात हो गई।

यदि बच्चा आसानी से कहानी पढ़ सकता है तो उसे कहानी स्तर पर चिह्नित करें।

यदि बच्चा कहानी पढ़ने में गलतियाँ करता है तो उसे अनुच्छेद स्तर पर चिह्नित करें।

नोट : स्तर को जाँचने की पूरी प्रक्रिया समझने के लिए वीडियो देखें –

पढ़ना और लिखना सीखने से संबंधित कुछ बातें

किसी भी कहानी/पाठ को पढ़कर अपने अनुभवों से जोड़कर समझने को पढ़ना कहा जाता है। किसी भी कहानी/पाठ को जल्दी–जल्दी और सही–सही पढ़ना, पढ़कर समझने का एक चरण है। कहानी/पाठ पढ़कर समझने के लिए पाठ को निजी ज़िंदगी और पूर्व अनुभवों से जोड़ना ज़रूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि लिखित भाषा को ही नहीं बल्कि उसके अर्थों को समझना 'पढ़ना' कहलाता है। ऐसा नहीं होता कि बच्चा पहले पढ़ना सीखे और बाद में समझना। अतः इस निर्देशिका में इन दोनों बातों का ध्यान रखा गया है कि बच्चे धाराप्रवाह पढ़ने के साथ–साथ उस कहानी/पाठ को समझ के साथ पढ़ें।

- कहानी/पाठ को धाराप्रवाह पढ़ना
- अर्थ को समझना
- कहानी/पाठ को पढ़कर अपने अनुभवों से जोड़ना

कक्षा संचालन

बच्चों के पढ़ने के स्तरानुसार उनके साथ कक्षा चलाएँ। कुछ गतिविधियाँ बड़े समूह में सभी बच्चों के साथ होंगी, कुछ गतिविधियाँ छोटे–छोटे समूह में की जाएँगी और कुछ व्यक्तिगत तौर पर। कार्यों का विभाजन आगे दिया गया है।

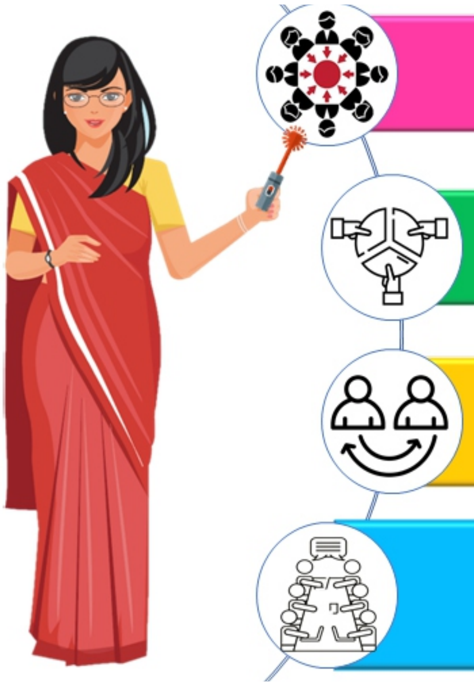

- **सभी की सहभागिता हो**
- **कार्यों का बँटवारा किया गया हो**
- **समय–समय पर गतिविधि के अनुसार प्रत्येक की ज़िम्मेदारी बदल रही हो**
- **सभी की बात सुनी जा रही हो/सभी को अपनी बात कहने का मौक़ा मिल रहा हो**

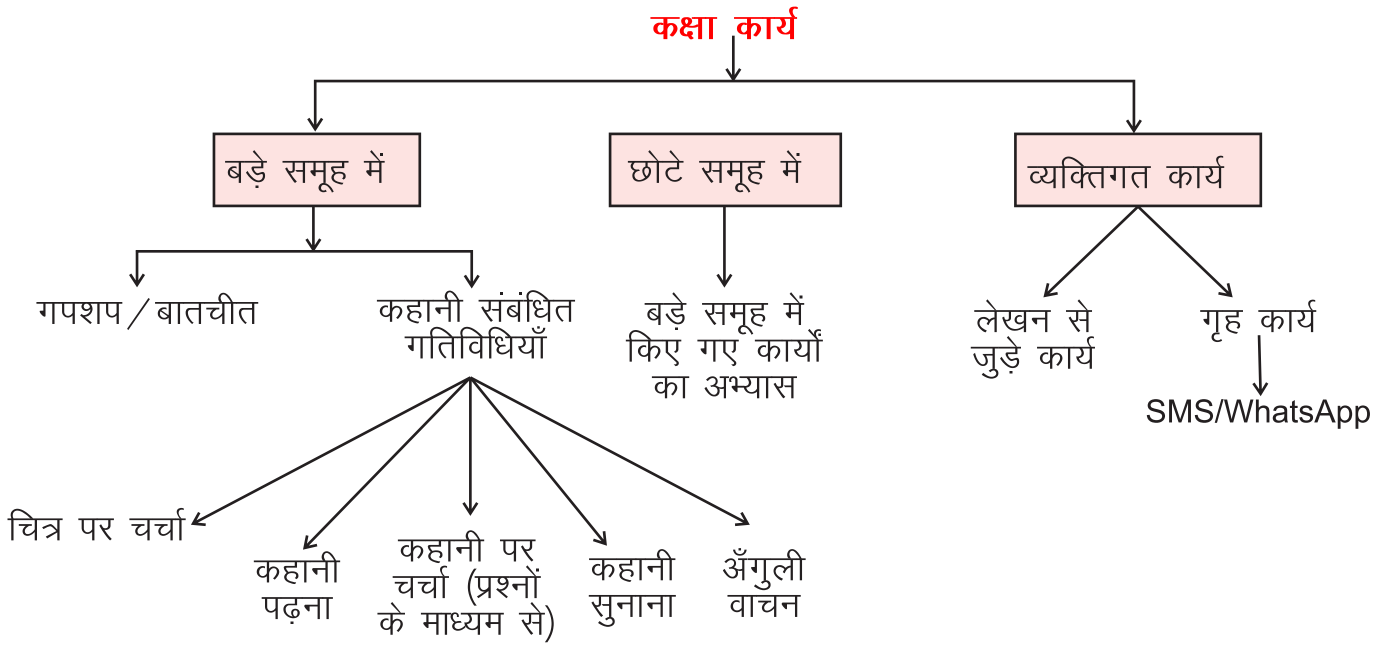

समूह कार्य का उद्देश्य है कि बच्चे छोटे–छोटे समूह में, किसी विषय पर मिलकर चर्चा करें और आपसी सहयोग से उस कार्य को पूरा करें, जिसमें समूह के हर एक बच्चे की न केवल भागीदारी हो बल्कि उस विशेष कार्य के लिए वे जिम्मेदार भी हों और उनके कार्य भी निश्चित हों। अलग–अलग गतिविधियों में अलग–अलग बच्चों की ज़िम्मेदारी हो और इसका निर्णय भी वे खुद लें।

लक्षित समूह

कक्षा 3–5 के वैसे बच्चे जिनके पढ़ने का स्तर **प्रारम्भिक, अक्षर व शब्द** हैं।

लक्ष्य

- बच्चे समझ और उचित प्रवाह के साथ किसी कहानी/पाठ को पढ़ सकें।
- सहजता से किसी विषय पर बोल सकें।
- लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकें।

भाषा में की जाने वाली गतिविधियाँ

(क) गपशप व कहानी — कहानी पढ़ने तथा उससे संबंधित गतिविधियाँ : जैसे गपशप, कहानी पढ़ना और कहानी पर चर्चा करना (20 मिनट)

(ख) ध्वनि चेतना व बारहखड़ी — बारहखड़ी : जैसे बारहखड़ी पढ़ना – आड़ी, खड़ी, बीच–बीच में से (15 मिनट)

(ग) खेल — खेल : आओ खेलें पुस्तिका से स्तरानुसार खेल, वीडियो, ऑडियो की सहायता भी ले सकते हैं (10 मिनट)

(घ) लेखन — लेखन/वर्कशीट : जैसे कुछ भी सोचो, बोलो और लिखो आदि (15 मिनट) कहानी के दूसरे दिन वर्कशीट हल करना।

(च) गृह कार्य — गृह कार्य : कार्य और बातचीत (10 मिनट)

- गतिविधियों में समय का बँटवारा प्रस्तावित है।
- किसी भी गतिविधि में अत्यधिक समय देने से पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया में संतुलन नहीं हो पाता है, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों के सीखने पर पड़ता है।
- कक्षा की गतिविधियों में संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है। यह समझना जरूरी है कि किसी गतिविधि में इतना कम समय भी न दें कि कुछ समझ में न आए।

(क) गपशप व कहानी – 20 मिनट

कक्षा की शुरुआत गपशप/बातचीत से करें। बातचीत के लिए कुछ गतिविधियाँ नीचे दी जा रही हैं।

बातचीत/गपशप

उद्देश्य

- बच्चे आत्मविश्वास के साथ दूसरों के समक्ष अपने आसपास की चीज़ों के बारे में बता पाएँ।
- अपने पूर्व–ज्ञान के आधार पर बातों एवं जानकारियों को जोड़ सकें।

गतिविधियाँ

शिक्षक किसी एक विषय पर बच्चों से बातचीत करें, जैसे– 'आज मैंने क्या खाया', 'आज बहुत गर्मी है', 'आज बारिश हो सकती है आदि। बच्चों को अपनी इस तरह की बातचीत में शामिल करें और उन्हें उस विषय पर अपने अनुभव बताने को कहें। इसी प्रकार शिक्षक हर दिन अलग–अलग विषयों पर बातचीत करें।

अपने मन से

शिक्षक बड़े समूह में, बच्चों से कहें कि "पता है, आज सुबह जब मैं सो कर उठा तो मेरा मन कर रहा था कि आज बारिश हो जाए और मैं बारिश में बहुत भीगूँ, नाचूँ और खेलूँ।" अब बच्चों से कहें कि आप भी अपने मन की कोई बात बताएँ, जैसे – कुछ भी देखा, सोचा या जो करना चाहते हैं आदि। बच्चों को पहले सोचने के लिए कहें, फिर उनसे पूछें।

जब मैं ख़ुश होता हूँ

जब मैं बहुत ख़ुश होता हूँ तब मेरा मन करता है, पक्षी बनकर खुले आसमान में तितली बनकर बहुत ऊँचा उड़ जाऊँ, पंख फैलाकर ख़ूब नाचूँ, सब लोगों से अपने मन की बातें कहूँ, अच्छा–अच्छा खाना खाऊँ आदि। फिर बच्चों से पूछें कि वे जब ख़ुश होते हैं तो उनका क्या–क्या करने का मन करता है।

मैंने सपने में देखा

कल रात मैंने एक सपना देखा कि मैं आसमान में चाँद तारों से मिली। उनसे हमारी दोस्ती हो गई। उन्होंने मेरी ख़ूब ख़ातिर की। हमने साथ में ख़ूब मस्ती की। अब आप बताएँ, आप सपने में क्या–क्या देखते हैं?

बच्चों के पढ़ने का स्तर कुछ भी हो, उनके साथ कहानी से सम्बंधित विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने से बच्चों में सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास होता है, उनका शब्द भंडार बढ़ता है और उनकी कल्पनाशक्ति बढ़ती है।

कहानी

उद्देश्य

- सुनने, समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास
- शब्द–भंडार, विचारशीलता और कल्पनाशीनलता का विकास

कहानी पढ़ने के दौरान

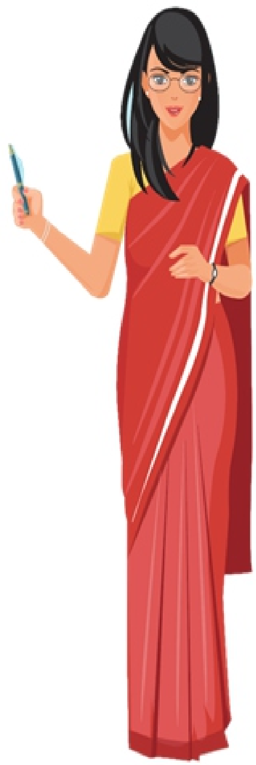

- एक कहानी को दो दिन उपयोग करें।
- कहानी के चित्र व नाम पर चर्चा करना, अनुमान लगाना कि कहानी में क्या होगा?
- शिक्षक स्पष्ट उच्चारण व आवाज़ के उतार–चढ़ाव के साथ कहानी पढ़कर सुनाए। ध्यान दें कि बच्चे पीछे–पीछे ना दोहराएँ।
- कहानी पर आधारित–तथ्य, अनुमानिक, शब्द–भंडार, अपनी राय अथवा सोच–विचार रखने संबंधी प्रश्न बनाएँ और एक–दूसरे समूह से पूछें।

कहानी पढ़ने के बाद

अंगुली वाचन : शिक्षक, प्रत्येक शब्द पर अंगुली रखकर धीमी गति से पढ़ें। बच्चे पीछे–पीछे न दोहराएँ। वे केवल शब्दों की ध्वनि के अनुसार शब्दों पर अंगुली आगे बढ़ाते रहें।

बच्चों से छोटे–छोटे समूह में कहानी का वाचन करवाएँ।

अब किसी एक बच्चे को पढ़ने के लिए कहें।

प्रतिदिन अलग–अलग बच्चों को पढ़ने का मौक़ा दें और पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

कहानी में प्रयुक्त मनपसंद शब्दों पर गोला लगाने या ढूँढने के लिए कहें।

(ख) ध्वनि चेतना व बारहखड़ी – 15 मिनट

ध्वनि–चेतना

उद्देश्य

स्वर–व्यंजन को मिलाकर उसकी ध्वनि को उच्चारित करने, उसको पहचानने और लिखने की समझ विकसित होती है।

ध्वनि–चेतना संबंधित गतिविधियाँ

गतिविधियाँ

मौखिक

तोड़ना

पानी – पा नी
रात – रा त
धरती – ध र ती

जोड़ना

खि ड़ की – खिड़की
आ वा ज़ – आवाज़
न दी – नदी

गतिविधियाँ

मौखिक

पहली आवाज़

पानी – पहली आवाज़ 'पा'
रात – पहली आवाज़ 'रा'
धरती – पहली आवाज़ 'ध'

दूसरी आवाज़

खिड़की – दूसरी आवाज़ 'ड़'
आवाज़ – दूसरी आवाज़ 'वा'
नदी – दूसरी आवाज़ 'दी'

गतिविधियाँ

लिखित

ध्वनि मिलाएँ

पा ल पाल
पी — —
नी — —

आगे ध्वनि मिलाएँ

— क – लोक
— ग – लोग
— ना – सोना

बारहखड़ी से संबंधित गतिविधियाँ

क खा कि ली ह ते पे रै सो दौ सं नः

गतिविधियाँ	ध्यान दें
शिक्षक बड़े समूह में बारहखड़ी की किसी भी एक–दो लाइन की प्रत्येक इकाई पर अँगुली रखते हुए स्पष्ट उच्चारण के साथ बारहखड़ी पढ़कर सुनाएँ।	बच्चे इस दौरान सिर्फ देखें और सुनें पीछे–पीछे दोहराएँ नहीं।
शिक्षक बारहखड़ी को पुनः पढ़कर सुनाएँ।	इस बार बच्चे अपने–अपने बारहखड़ी कार्ड पर अँगुली चलाएँ।
'मेरे जैसा कौन पढ़ेगा?' या 'अब कौन पढ़ेगा?' आदि कहकर प्रतिदिन अलग–अलग तीन चार बच्चों को पढ़ने का अवसर दें।	पढ़ने के बाद बच्चों को शाबाशी अवश्य दें।
बारहखड़ी की पूरी लाइन पढ़वाने के बाद बीच–बीच में से ज़रूर पूछें, जैसे– 'च' की लाइन में 'चि' कहाँ हैं 'चे' कहाँ है आदि।	बच्चों को सोच–समझकर बताने के लिए प्रोत्साहित करें।
बारहखड़ी कार्ड में बीच–बीच से बारहखड़ी की कोई भी इकाई बोलें और बच्चों को कार्ड में ढूँढने के लिए कहें जैसे रू रे, टे, कु, पा, नी आदि।	बच्चों को बारहखड़ी बड़े या छोटे समूह में अथवा व्यक्तिगत रूप से दें।
बारहखड़ी की इकाइयों को ज़मीन/कॉपी/कागज़ पर भी लिखवाएँ और पढ़वाएँ।	कुछ दिनों बाद शिक्षक कुछ शब्द, चीज़ों और मिठाइयों आदि के नाम भी बोलें।

(ग) खेल – 10 मिनट

आओ खेलें पुस्तिका की मदद से बच्चों के साथ स्तरानुसार खेल कराएँ। इसके अतिरिक्त वीडियो, ऑडियो की सहायता भी ले सकते हैं।

(घ) लेखन/वर्कशीट – 15 मिनट

अक्सर बच्चे घर की दीवारों पर चित्र या टेढ़ी–मेढ़ी लकीरें उकेरते हुए नज़र आते हैं। यह टेढ़ी–मेढ़ी लकीरें वास्तव में उनकी सोच ही होती है। यही अभिव्यक्ति आगे चलकर अर्थपूर्ण बन जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चा पढ़ने के साथ–साथ अपने विचारों को व्यक्त करना भी सीखे।

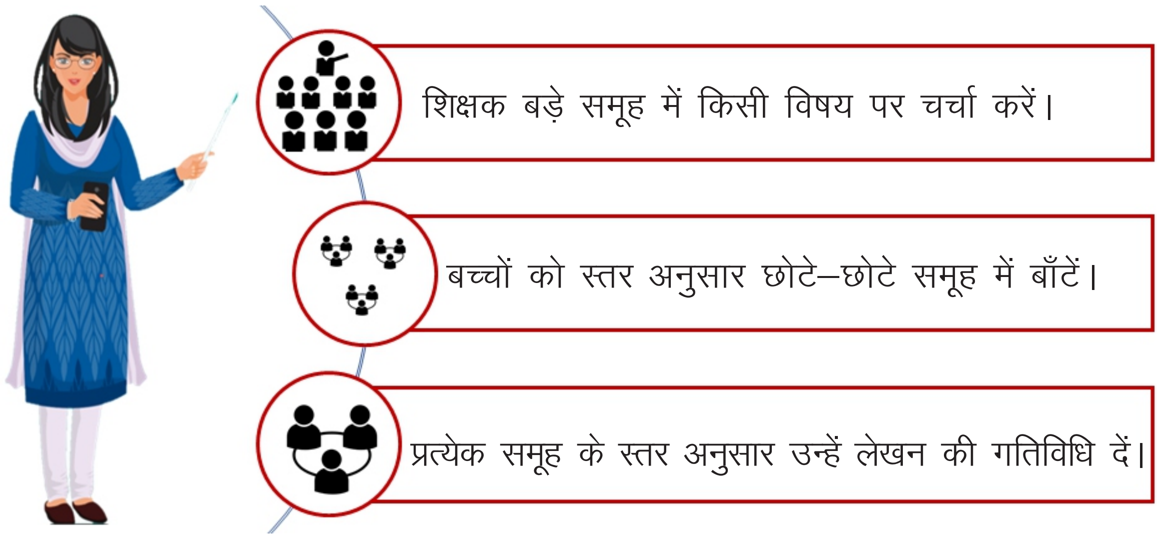

स्तरानुसार लेखन कार्य

(च) गृहकार्य – 10 मिनट

बच्चों से दिए गए गृहकार्य पर बातचीत करें।

हिन्दी निर्देशिका
एडवांस लेवल

प्रथम दिवस

1. समूह में पढ़ना	10 मिनट
2. पाठ पर बातचीत : प्रश्न बनाना व पूछना	30 मिनट
3. वर्कशीट : समूह में चर्चा और उत्तर लिखना	20 मिनट
4. रोल प्ले : रोल प्ले की तैयारी व अभ्यास	10 मिनट

द्वितीय दिवस

1. रोल प्ले — प्रस्तुति / चर्चा	30 मिनट
2. वर्कशीट की जाँच एवं उत्तर पर चर्चा	20 मिनट
3. माइंड मैपिंग, वर्गीकरण, लेखन	20 मिनट

समझ के साथ पढ़ना

किसी भी पाठ/कहानी को जल्दी और सही पढ़ना, पढ़कर समझने का एक चरण है। पाठ/कहानी पढ़कर समझने के लिए उस पाठ/कहानी को निजी ज़िंदगी और पूर्व अनुभवों से जोड़ना ज़रूरी होता है। इसलिए कहा जाता है कि लिखित भाषा को ही नहीं बल्कि उसके अर्थों को समझना 'पढ़ना' कहलाता है।

हम जानते हैं कि हमारे स्कूलों में बच्चों के पढ़ने और सीखने का स्तर उसकी कक्षा के अनुसार नहीं है। महामारी के बाद यह समस्या और बढ़ गई है। इसलिए सोचने की बात यह है कि अगर उनका आधार ही कमज़ोर होगा तो वे अपनी कक्षा के अन्य विषयों को कैसे पढ़ पाएँगे और पढ़कर कैसे समझ पाएँगे? अतः ज़रूरत इस बात की है कि उनकी आधारभूत दक्षता को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष गतिविधियाँ लगातार की जाएँ ताकि वे किसी भी पाठ/कहानी को पढ़कर समझ सकें, आलोचनात्मक ढंग से सोच सकें और किसी भी विषय पर अपनी सोच मौखिक व लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकें। इसके लिए कक्षा में उनके साथ हर रोज़ कहानी/पाठ पर बातचीत करनी होगी और उनका शब्द भंडार बढ़ाना होगा। हर रोज़ लेखन की गतिविधियाँ कराई जाएँगी ताकि उनकी लेखन क्षमता बढ़ सके। इस उम्र के बच्चों को कोई भी पाठ पढ़ कर समझ आ जाए, इसके लिए ज़रूरी है कि जिस विषय पर पाठ लिखा गया है, उसके बारे में पहले से कुछ पता हो। इसे हम पूर्व–ज्ञान कहते हैं। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि कई बार बच्चा सही तरीके से पाठ पढ़ तो लेता है, परन्तु उसके बारे में कुछ भी पता न होने की वजह से वह कुछ समझ नहीं पाता। जब भी बच्चों के साथ **'पढ़कर समझने की क्षमता'** पर काम किया जाए, तो आवश्यक है कि उन्हें विषय ज्ञान, अपने आसपास के परिवेश आदि के माध्यम से कार्य करवाए जाएँ।

ध्यान रखें कि इस उम्र के बच्चों का अनुभव काफी ज़्यादा होता है किंतु यह अनुभव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में नहीं झलकता है क्योंकि बच्चा उस पाठ/कहानी के निहित अर्थों को समझ ही नहीं पाता है।

कक्षा में की जाने वाली गतिविधियाँ

प्रथम दिवस

1. बच्चों द्वारा कहानी पढ़ना

बच्चे पहले मन ही मन में पाठ/कहानी पढ़ें। फिर अलग–अलग बच्चे को हाव–भाव के साथ बड़े समूह में पढ़ने के लिए कहें। (शुरुआत में शिक्षक/शिक्षिका भी हाव–भाव से पाठ/कहानी पढ़कर सुना सकते हैं।)

2. पाठ पर बातचीत : प्रश्न बनाना व पूछना

बच्चों को समूह में पाठ/कहानी पर प्रश्न बनाने के लिए कहें। फिर हर समूह अपने–अपने प्रश्न दूसरे समूह के बच्चों से पूछे।

कुछ खास प्रकार के प्रश्न जो बच्चों को पाठ समझने, अपने जीवन से जोड़ने, अपनी बातों को विस्तार से बताने और उनकी दक्षताओं को बेहतर करने में मदद करते हैं। ऐसे प्रश्न हैं :

- तथ्य वाले प्रश्न, अंदाज़ा लगाने वाले प्रश्न
- सोचने पर मजबूर करने वाले प्रश्न
- अपरिचित शब्द, मुहावरे आदि का प्रयोग अलग सन्दर्भों में किए जाने वाले प्रश्न
- राय देने वाले प्रश्न, निर्णय लेने वाले प्रश्न
- किसी बातचीत को विस्तार/संक्षिप्त रूप से बताने के लिए प्रेरित करने वाले प्रश्न

कहानी/पाठ समझने के तरीक़े

किसी भी कहानी/पाठ में दी गई जानकारियों/बातों को समझने के लिए, उसे चित्रित रूप में दर्शाने से पढ़कर समझने की क्षमता विकसित होती है। चित्रित रूप में पाठ की जानकारियों/बातों को नियोजित करने के तीन तरीक़े सुझाव के रूप में दिए गए हैं :–

1. सूचनात्मक पाठ

2. कहानी

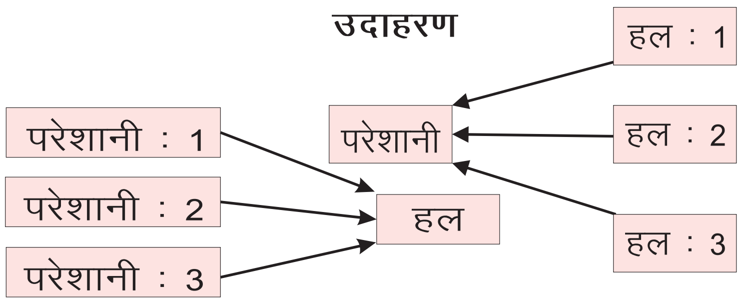

3. कहानी की घटनाओं या सूचनाओं को क्रमबद्ध तरीक़े से लिखना

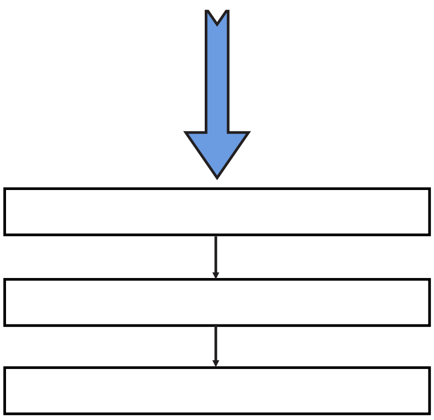

पाठ/कहानी की घटनाएँ/सूचनाएँ

3. वर्कशीट

वर्कशीट : समूह में चर्चा और उत्तर लिखना

- समूह में : बच्चे समूह में वर्कशीट के प्रश्नों पर चर्चा करें।
- व्यक्तिगत : अपनी–अपनी वर्कशीट के प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगत रूप से लिखें।

4. रोल प्ले

बच्चों को पढ़ाई गई कहानी पर रोल प्ले की तैयारी व अभ्यास करने के लिए कहें।

द्वितीय दिवस

1. रोल प्ले

बच्चों को हर पाठ या कहानी पर रोल प्ले तैयार करके उन्हें प्रस्तुत करने का मौक़ा दें।

बच्चे उस विषय से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं

- रचनात्मकता
- सृजनात्मकता
- तर्क, वितर्क करने की क्षमता विकसित होती है

बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है

- किसी भी विषय पर अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं

समूह में मिलकर कार्य करने की क्षमता बढ़ती है

- सभी बच्चे अपने अनुभव द्वारा विषय के बाहर घटित घटनाओं को जोड़ते हुए उन पर विचार–विमर्श करते हैं
- उनका व्यवहार भी प्रभावित होता है

रोल प्ले करने का तरीक़ा

- कक्षा में शामिल सभी बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटें।
- समूह में 6–8 बच्चों को शामिल करें।
- रोल प्ले के दौरान सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- समूह में सभी बच्चे अपने–अपने पात्रों के चयन व संवाद पर चर्चा करें व अभ्यास करें।
- एक पाठ/कहानी पर एक दिन में केवल 2–3 समूहों को ही रोल प्ले करने का मौक़ा दें। अन्य समूहों को किसी अन्य दिन अन्य कहानी/पाठ पर रोल प्ले प्रस्तुत करने को कहें।
- रोल प्ले प्रस्तुत करने के लिए 3–4 मिनट से ज़्यादा समय न दें।

रोल प्ले के लिए संवाद लेखन

2. वर्कशीट जाँचना

बच्चों के लिए हर कहानी के साथ एक वर्कशीट दी जा रही है। वर्कशीट के प्रश्नों पर बच्चे पहले अपने–अपने समूह में चर्चा करें और फिर वर्कशीट को हल करें। हल करने के बाद समीक्षा स्वयं करें। उत्तरों पर शिक्षक बच्चों के साथ चर्चा करें। चर्चा के बाद प्रत्येक बच्चा अपनी–अपनी वर्कशीट को खुद देखे और सही करे और हो सके तो किसी को दिखाए।

3. माइंड मैपिंग

हम जब माइंड मैपिंग करते हैं तो अच्छा यही होता है कि इसे पूरी कक्षा के बच्चों के साथ किया जाए, ताकि जब बच्चा कोई शब्द बोले तो उस शब्द को वह अपने अनुभव से जोड़ पाए। इससे शब्दों की सूची काफी लंबी हो सकती है। इस अभ्यास से बच्चे नए–नए शब्द और उन शब्दों से जुड़े संबंधों को सीखते हैं।

माइंड मैपिंग

उद्देश्य

- शब्द–भंडार बढ़ाना व शब्दों का वर्गीकरण करना
- शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना
- माइंड मैपिंग द्वारा आए शब्दों से कहानी लिखना

माइंड मैप करने के लिए गतिविधियाँ

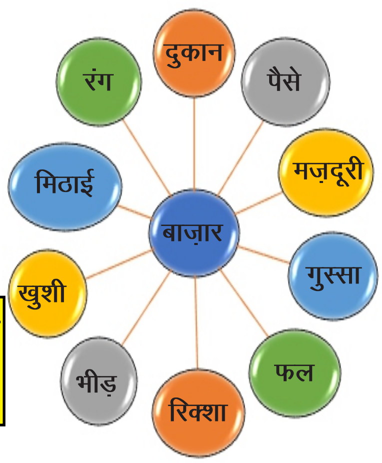

क्रिया	भाव	खाने पीने की वस्तु
मज़दूरी	गुस्सा	फल
	खुशी	

शिक्षक बच्चों से पूछें कि बाजार (उदाहरण के लिए) शब्द सुनकर आपके दिमाग में और कौन–कौन से शब्द आ रहे हैं, बताएँ।

↓

शब्दों को बोर्ड पर लिखें।

↓

शब्दों का वर्गीकरण करें वाक्य/अनुच्छेद/कहानी लिखने को कहें।

↓

वाक्य बनाना : मिठाई – मुझे मिठाई पसंद है।
खिलौना – खिलौना बहुत सुन्दर है।